मैं मुसोलिनी का अभ्युदय हुआ।

इटली में फासिस्ट शासन की स्थापना और मुसोलिनी :

बेनिटो मुसोलिनी का जन्म 1885 ई० में उत्तरी इटली के रोमनो (Romagna) के पहाड़ी क्षेत्र के एक गांव में हुआ था। वह क्रान्तिकारी और समाजवादी विचारों का था।

जिस प्रकार सत्तारुढ़ होने पर चीन में डा० सनयात सेन ने कुओमिनतांग पार्टी का संगठन किया था उसी प्रकार इटली में मुसोलिनी फासिस्ट पार्टी का संगठन किया।

1928 में पार्टी को नए सिरे से संगठित कर राज्य और पार्टी के पारस्परिक सम्बन्ध को अटूट बना दिया। सारी छोटी पार्टियों को विकेन्द्रित कर उन्हें जोड़कर केन्द्रीय पार्टी बनाया। इसे संगठित किया। इस संगठन में कौंसिल को सर्वोपरि स्थान दिया गया जिसका नाम था फासिस्ट ग्रैंड कौंसिल (Fascist Grand Council)। इसमें कुल मिलाकर 25 सदस्य होते थे और उसका स्थायी अध्यक्ष स्वयं मुसोलिनी था। एक कानून बनाकर ग्रैंड कौंसिल को सबका विधान से जोड़ दिया गया तथा मंत्रिमंडल के सदस्य इसके पदेन सदस्य बना दिए गए।

मुसोलिनी ने अधिक से अधिक अपनी पार्टी का सदस्य का प्रयास

ढूंढ निकाला। उसने यह व्यवस्था की कि अधिक से अधिक नये लोग पार्टी के सदस्य बनें। एक कालचर संस्था का गठन किया गया जिसमें वे ही बालक भर्ती हो सकते थे जो आठ से चौदह वर्ष की आयु के बीच हो। इसे बैलिल्लो (Balillo) कहा गया। इसमें शिक्षा लेने के बाद बच्चे दूसरी संस्था के सदस्य बन जाते थे जिसे एवानगार्डिया (Avanguardia) कहा जाता था। जब इसकी भी शिक्षा समाप्त हो जाती थी तब प्रशिक्षित कालचर युवक फासिस्ट में प्रवेश करते थे। यहां तीन वर्षों के प्रशिक्षण लेने के उपरान्त वह फासिस्ट नागरिक सेना में भर्ती होता था। इस तरह पार्टी को इतना अधिक आकर्षक बनाया गया कि लोग स्वतः इधर आकर्षित होने लगे।

56 के पश्चात इटली की राजनीतिक, आर्थिक अवस्था दुर्बल हो चुकी थी। सरकार स्थिति को सुधारने में दुर्बल थी। परिस्थिति से लाभ उठाकर मुसोलिनी ने राजनीतिक सत्ता को हथियाने के लिए ठोस कदम उठाया। उसने शक्तिशाली राष्ट्रीय सरकार का नारा बुलन्द किया। उसने चैम्बर ऑफ डिपुटीज के सामने चुनाव पद्धति में सुधार लाने, आर्थिक सुधार, सफल विदेश नीति और मंत्रि मंडल में फासिस्ट दल के पाँच सदस्यों की नियुक्ति की माँग रखी। अक्टूबर 1922 ई० में

मुसोलिनी को एक नए मंत्रीमंडल के गठन के लिए आमंत्रित किया गया। 30 अक्टूबर, 1922 ई० को मुसोलिनी के नेतृत्व में एक नए मंत्रीमंडल का गठन हुआ।

~~मुसोलिनी की गृह-नीति :~~

मुसोलिनी के कार्य

मुसोलिनी जो फासिस्ट सेना का कमाण्डर (Duce) और इटली का अधिनायक था, एक कुशल शासक भी था। उसने इटली के गृह-नीति एवं वैदेशिक नीति का सफलतापूर्वक संचालन कर इटली को एक सबल राष्ट्र बनाने का प्रयास किया।

प्रशासन का फासिस्टीकरण

मुसोलिनी ने संसद और शासन पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया। पहले का शासन चलाने के लिए फासिस्ट प्रीफेक्ट की नियुक्ति की गई। 1923 ई० में एक अधिनियम बनाया। इसके अनुसार बहुमत वाले दल को चेम्बर ऑफ डिपुटीज में दो-तिहाई स्थान भरने का अधिकार दिया गया। शेष एक तिहाई स्थान अन्य राजनीतिक दलों को मिलता। इससे फासिस्ट दल को सर्वाधिक लाभ हुआ। स्थानीय शासन की निर्वाचन पद्धति समाप्त कर दी गई। फासिस्ट के समर्थकों को स्थानीय प्रशासक के पद पर नियुक्त किया गया। इसी बीच संसद ने मुसोलिनी को अधिनायक

इस प्रकार मुसोलिनी ने सुदृढ़ केन्द्रीय सरकार की स्थापना की जिसमें कोई विपक्ष नहीं था, कोई प्रजातांत्रिक संस्था नहीं थी, कोई स्थानीय स्वशासी संस्था नहीं थी, कोई मंत्रिमंडल नहीं था तथा बहुमत का कोई प्रश्न ही नहीं था। का आविष्कार दे दिया। जल, स्थल और वायु सेना पर इसी का अधिकार था। वह शासन का प्रधान था तथा इसकी अनुमति से कोई प्रस्ताव सदन में लाया जा सकता था। इसकी अनुशंसा पर मंत्रियों की नियुक्ति अथवा पदच्युति हो सकती थी। इसके शासकीय आदेश ही कानून थे।

समाचार पत्रों की स्वतंत्रता समाप्त कर दी गई। केवल फासिस्ट समाचारपत्रों को ही प्रकाशन का अधिकार मिला। विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों को फासिस्ट सिद्धांतों की शिक्षा विद्यार्थियों को देने के लिए बाध्य किया गया। विश्वविद्यालय और स्कूलों में फासिस्ट शिक्षकों की नियुक्ति होती थी। भाषण और संगठन की स्वतंत्रता को समाप्त कर दिया गया। गुप्तचरों का एक विशिष्ट संगठन बना। यह संगठन शासन के दुश्मनों का पता लगाता था और उन्हें सैनिक न्यायालय के समक्ष दंड के लिए उपस्थित करता था।

सन् 1928 में चुनाव प्रणाली में पुनः परिवर्तन किया गया। मतदाता सूची फासिस्ट दल द्वारा तैयार किया गया जिससे फलस्वरूप संसद पर फासिस्ट दल का एकाधिकार स्थापित हो गया। (ऊपर)

कानून के क्षेत्र में सुधार:

इटली में कानूनों की एक नवीन संहिता तैयार की गई। मृत्युदंड उन्हें दिया जाता था जो राजपरिवार के सदस्य तथा प्रधानमंत्री के जीवन और स्वतंत्रता पर आघात करते थे। नवयुवकों को प्रशिक्षित और अनुशासित करने के लिए फासिस्ट परिषदों की स्थापना की गई। नवयुवकों को फासीवाद के सिद्धान्त से परिचित कराया जाता था तथा

उन्हें सैनिक शिक्षा दी जाती थी। 18 वर्ष से 23 वर्ष के सभी नवयुवकों के लिए सैनिक शिक्षा अनिवार्य कर दिया गया।

3) अर्थव्यवस्था में सुधार :

इटली के आर्थिक पुनर्गठन के लिए मुसोलिनी ने 1926 ई० में तैरह फासिस्ट सिंडिकेटों का निर्माण किया। ये सिंडिकेट अपने क्षेत्र में स्वतंत्र थे। सिंडिकेट को मजदूरों के काम की अवधि और उनकी मजदूरी तय करने का अधिकार था। मजदूरों की दशा में और सुधार लाने के लिए 1927 ई० में मुसोलिनी ने "श्रम अधिकार-पत्र" लागू किया। वर्ष में एक बार मजदूरों को वेतन के साथ लम्बी छुट्टी देने की व्यवस्था की गई। व्यवसायिक शिक्षा की भी व्यवस्था की गई। श्रम को सामाजिक कर्तव्य घोषित किया गया तथा श्रमिकों के हितों की सुरक्षा करना राज्य का दायित्व था। वाणिज्य-व्यापार को बढ़ावा दिया गया। नए-नए उद्योगों की स्थापना की गई। व्यापारिक संघ भेद कर दिए गए।

कृषि की उन्नति —

कृषि की उन्नति के लिए आधुनिक उपकरण अपनाए गए। गेहूँ, रुई और तम्बाकू का उत्पादन बढ़ा। किसानों को वैज्ञानिक ढंग से कृषि कार्य के तरीके बताए गए। किसानों को ऋण देने के लिए कृषि-बैंक खोला गया। बाहरी देशों से आयात पर रोक लगा दी गई।

उद्योग धंधो का विकास -

देश के उद्योग का विस्तार किया गया। जहाज बनाने वाली कम्पनी को अधिक-से अधिक जहाज बनाने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता था। बाहर से वाहन आयात पर रोक लगा दी गई।

रेल आवागमन के साधनों का विकास -

रेलवे लाइन का विस्तार किया गया। जिससे यातायात में काफी सुविधा हुई। रेल को उन्नत करने के लिए मुसोलिनी ने एक आयोग की व्यवस्था की इसकी रिपोर्ट पर सरकार की ओर से शीघ्र कार्यवाही की जाती थी।

बेकारी की समस्या का समाधान -

अनेक तरह के उद्योग-धन्धे खोले गए जिससे लोगों को नौकरी मिले। इसके अतिरिक्त मुसोलिनी ने सड़कों, पुलों, स्कूलों, निवास-गृह और बांधों का निर्माण करवाया जिससे बेकारों को मजदूरी मिली।

शिक्षा के क्षेत्र में सुधार :

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य फासीवाद के सिद्धान्त को प्रचार करना था। 14 वर्ष की उम्र के बच्चों के लिए शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। फासीवाद के समर्थकों को ही शिक्षक के पद पर नियुक्त किया जाता था। वे फासिस्ट सरकार के समर्थन करने की शपथ लेते थे। फासी वाद बच्चों में

राष्ट्रीयता की भावना को जगाना था। सैनिक शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया।

पोप के साथ समझौता :

मुसोलिनी चाहता था कैथोलिक धर्म फासीवाद का सहायक हो। इसलिए कैथोलिक चर्च के प्रति मित्रता की नीति अपनाई। प्रारम्भिक पाठशालाओं में धार्मिक शिक्षा देना अनिवार्य कर दिया गया। पादरियों का वेतन बढ़ा दिया गया और सैनिकों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए पादरियों की नियुक्ति की गई। मुसोलिनी और पोप में सम्बन्ध सुधारना चाहता था। फरवरी 1929 ई० में पोप और फासिस्ट सरकार के प्रतिनिधियों के बीच समझौता हुआ। समझौता के अनुसार, (1) पोप ने अपना अधिकार त्याग दिया तथा इटली के राज्य तथा सेवाय राजवंश को मान्यता दी। (2) इटली के राजा ने वेटिकन नगर में पोप की प्रभुसत्ता को स्वीकार किया। (3) पोप को दूसरे देशों में राजदूत भेजने तथा दूसरे देशों के राजदूत को स्वीकार करने का अधिकार दिया गया था। पोप को सभी देशों के साथ स्वतंत्र रूप से पत्राचार करने का अधिकार मिला। वेटिकन नगर को तटस्थ तथा अनुल्लंघनीय घोषित किया गया। इसने अपना सिक्का, डाक-टिकट, तार-व्यवस्था और रेल बिछाने का अधिकार दिया गया। (4) धार्मिक समझौते के अनुसार कैथोलिक धर्म इटली का राजधर्म स्वीकार किया गया।

तथा वह अपनी निजी डाक टिकट एवं मुद्रा जारी कर सकता था।

5) सरकार ने पोप को प्रतिवर्ष दस करोड़ डालर की धनराशि देने का वचन दिया।
6) पादरियों को वेतन देने का दायित्व सरकार ने स्वीकार कर लिया।
7) सभी विद्यालयों में धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य कर दिया गया।

इस समझौते के फलस्वरूप इटली के धार्मिक इतिहास में एक नए युग का सूत्रपात हुआ। पोप तथा राज्य के सम्बन्धों में काफी सीमा तक सुधार हो गया। किंतु शीघ्र ही नागरिकों की शिक्षा के प्रश्न पर दोनों के मध्य मतभेद उत्पन्न हो गया। रोमन कैथोलिकों द्वारा संचालित शिक्षण-संस्थाओं को मुसोलिनी ने फासिस्ट दल के विद्यालयों में विलीन कर दिया। चौदह वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक रोमन कैथोलिक को फासिस्ट दल के नेता के प्रति स्वामिभक्त रहने की दीक्षा लेना अनिवार्य कर दिया गया। मुसोलिनी ने धीरे-धीरे शिक्षा के क्षेत्र में चर्च के प्रभाव को बिल्कुल समाप्त कर दिया।

मुसोलिनी की विदेश नीति :

मुसोलिनी की विदेश नीति फासिस्ट सिद्धान्त पर आधारित थी। उसे राष्ट्र संघ पर भी विश्वास नहीं था क्योंकि इसका आधार राष्ट्रों की समता का सिद्धान्त था। मुसोलिनी की विदेश नीति का पहला उद्देश्य इटली की दुर्बलता और हीनता की भावना को दूर कर उसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय जगत में सम्मान पूर्ण पद प्राप्त करना और विश्व की महान शक्तियों में उसे स्थान दिलाकर उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाना था। मुसोलिनी की विदेश नीति का दूसरा मुख्य उद्देश्य इटली के लिए साम्राज्य का निर्माण करना था। विश्वयुद्ध के बाद इटली का बाल्कन क्षेत्र, प० एशिया तथा अफ्रीका में साम्राज्य विस्तार का ख्वाब भंग हो चुका था। इटली के निवासियों को यह विश्वास था कि मित्रराष्ट्रों ने उसके साथ विश्वासघात किया था इसलिए वर्साय संधि का संशोधन करना उसका तीसरा उद्देश्य था। मुसोलिनी अपनी सत्ता को बनाए रखना चाहता था इसलिए भी साम्राज्यवादी नीति आवश्यक थी।

1) उसने रोड्स और डोडिकानिज द्वीप समूहों पर 1923ई० की लोसान की संधि के अनुसार अधिकार कर लिया।
2) उसने फ्यूम नगर पर 1924 में अधिकार कर लिया।
3) 1939 ई० में उसने अलबानिया

पर अधिकार कायम किया

4) रूस के साथ संधि - 1924 में रूस और इटली के बीच व्यापारिक संधि हुई। इटली सोवियत संघ को राष्ट्रसंघ में सम्मिलित करना चाहता था और इस प्रकार दोनों में घनिष्ठता आबद्ध रही थी। अप्रैल 1927 ई० में हंगरी के साथ, सितम्बर 1928 ई० में यूनान के साथ तथा फरवरी 1930 ई० में आस्ट्रिया के साथ इटली ने मित्रता की संधि की।

अबीसीनिया पर इटली का आक्रमण - इटली यहाँ की जातियों को सभ्य बनाना अपना पवित्र कर्तव्य समझता था। इटली की औद्योगिक प्रगति के लिए लोहा, कोयला, खनिज पदार्थ, तेल, रुई तथा औद्योगिक सामग्रियों की पूर्ति यहाँ से हो सकती थी। इसके अलावे इटली की बढ़ी हुई जनसंख्या को यहाँ बसाया जा सकता था।

इसके पश्चात फ्रांस तथा जर्मनी के साथ समझौता कर अपनी स्थिति को सुदृढ़ किया। 25 अक्टूबर 1936 ई० को जर्मनी और इटली के बीच एक संधि हुई जो रोम - बर्लिन धुरी कहलाती है।

फासिस्ट दल की सफलता के कई कारण थे जैसे -
इटली की दयनीय आर्थिक दशा, पूँजीपतियों का समर्थन, मुसोलिनी का व्यक्तित्व तथा सभी वर्गों का समर्थन था। क्योंकि उद्योगपतियों का विश्वास था कि इस दल के सत्तारूढ़ हो जाने से किसानों का विद्रोह समाप्त हो जाएगा। बुद्धिजीवी

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]